दिनकर के काव्य में राष्ट्रीय चेतना

[1]डॉ. पूरण प्रकाश जाटव

शोध सारांश

आधुनिक काल में हिन्दी काव्य में पौरूष का प्रतीक और राष्ट्र की आत्मा का गौरव गायक जिस कवि को माना जाता है, उसी का नाम रामधारीसिंह दिनकर है। वाणी में ओज, लेखनी में तेज और भाषा में अबाध प्रवाह उनके साहित्य में देखा जा सकता है। दिनकर का जन्म बिहार के सिमिरिया घाट स्थान स्थान पर 30 सितम्बर 1908 को हुआ। मुंगेर जिले में यह छोटा सा ग्राम है। इनके पिता का नाम श्री रविसिंह था। कवि वर दिनकर ने काव्य क्षेत्र में कुरूक्षेत्र और 'उर्वशी' जैसी महान् कृतियॉ देने के अतिरिक्त 'रेणुका', रसवन्ती, सामधेनी, बापू, रश्मि रथी, द्वन्द्वगीत, नील कुसुम,परशुराम की प्रतीक्षा, आत्मा की आंखे आदि अनेक कृतियॉ प्रदान की है। सन् 1959 में पद्यभूषण की उपाधि से विभूषित हुए। इन्हे ''संस्कृति के चार अध्याय'' ग्रन्थ पर साहित्य अकादमी से पाँच हजार का पुरस्कार प्राप्त हुआ था। सन् 1972 में उर्वशी नामक कृति पर इन्हे ज्ञानपीठ पुरस्कार दिया गया। देव दुर्विपाक से 24 अप्रेल सन् 1974 को अपका असामयिक निधन हो गया।

मूल शब्द : साहित्य, राष्ट्रीय चेतना, राष्ट्रीय आंदोलन, राष्ट्रीय जागरण, राष्ट्रीय गौरव

---

[1]Corresponding Author

[1]सहायक आचार्य-हिन्दीए स्व. राजेश पायलट राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, बांदीकुई (दौसा)

प्रस्तावना

हिन्दी साहित्य में दिनकर की पहचान राष्ट्रकवि के रूप में है। उनका साहित्य राष्ट्रीय जागरण व संघर्ष के आह्वान का जीता-जागता दस्तावेज है। दिनकर के यहाँ राष्ट्रीय चेतना कई स्तरों पर व्यक्त हुई है। हुंकार, रेणुका, इतिहास के आंसू जैसी कविताओं में दिनकर जी ने विद्रोह और विप्लव के स्वर को उभारा है। इनमें कर्म, उत्साह, पौरूष एवं उत्तेजना का संचार है। यह सब तत्कालीन राष्ट्रीय आंदोलन की प्रगति के लिये अत्यंत स्तर

पर वहॉ दिखाई देती है, जहॉ वे शोषण का प्रतिकार करने का समर्थन करते है। वे कहते है कि यदि कोई हमारे साथ अन्यायपूर्ण व्यवहार करे तो नैतिकता का तकाजा युद्ध करना ही है न कि अनैतिकता को स्वीकार करना-

"छीनता हो स्वत्व कोई और तू

त्याग तप से काम ले, यह पान है।"

संघर्ष के आह्वान के साथ दिनकर जी ने प्राचीन भारतीय आदर्शो एवं मूल्यों की स्थापना के माध्यम से राष्ट्रीय जागरण व राष्ट्रीय गौरव की भावनाओं को जगाने में महत्वपूर्ण योगदान दिया है।

दिनकर जी की राष्ट्रीय चेतना संकीर्ण नही है। यह केवल ब्रिटिश राज्य का विरोध करने वाली है अपितु स्वतंत्रता के बाद भी जनता के सामाजिक-आर्थिक शोषणके विरूद्ध आवाल उठाने वाली है। कवि ने दिल्ली, 'नीम के पत्ते', परशुराम की प्रतिज्ञा आवाज उठाने वाली है। कवि ने 'दिल्ली', नीम के पत्ते, 'परशुराम की प्रतिज्ञा' में स्वतंत्रता -उपरांत जनजीवन में व्याप्त आर्थिक, सामाजिक एवं राजनीतिक विषमताओं का चित्रण किया है।

"सकल देश में हालाहाल है, दिल्ली में हाला है।

दिल्ली में रोशनी, शेष भारत में अंधियारा है।"

इस प्रकार यह कहने में कोई अतिशयोक्ति नहीं है कि दिनकर जी के यहॉ राष्ट्रीय चेतना उसी स्तर पर व्यक्त हुई है जो उन्हे भारतेन्दु, गुप्त जी की परम्परा में स्थान दिलवाती है। दिनकर जी ने यह स्वीकार किया है कि राष्ट्रीयता ने उन्हे बाहर से आकर आक्रांत किया है और फिर भी राष्ट्रीयता उनके व्यक्तित्व का अभिन्न अंग बन गयी है।

अपने सबसे पहले सामाजिक जीवन की चुनौती को स्वीकार किया है। उनकी कविताओं में खुलकर क्रांति का शंखनाद सामने आया है। हुँकार की प्रमुख कविता दिनकर जी की राष्ट्रीय भावना को विकास समझने के लिए महत्वपूर्ण है। दिनकर जी ने वर्तमान के स्वर को सुना और अपना सब कुछ बलिदान करने के लिए तैयार हो गये। पराधीनता की बेबसी का जुआ उतारने के लिए वे निर्भिक होकर शान्ति के मार्ग पर चलने का सन्देश देने लगे-

वर्तमान की जय अभीत हो, खुलकर मन की पीर बजे,

एक राग मेरा भी रण में, बंदी की जंजीर बजे।

नई किरण की सखी, बाँसुरी छिद्रो की कूक उठे,

सॉस-सॉस पर खड्ग धार पर नाच हृदय की हूक उठे।

कवि को नये युग की आहट सुनाई पडती है। उसकी क्रांति की शक्ति पर पूरा विश्वास हो गया है। वह नये युग का स्वागत करत हुये कहता है कि -

जय हो, युग के देव पधारो ! विकट, रूद्र, हे अभिमनी!

मुक्त-केशिनी खडी द्वार पर कब भावनाओं की रानी।

अमृत-गीत तुम रचो कला निधि! बुनो कल्पना की जाली,

तिमिर-ज्योति की समर-भूमि का मैं चारण, मै वैताली ।

संस्कृत के अनुसार 'राष्ट्र' में 'ध' प्रत्यय के योग से 'राष्ट्रीय' शब्द बनता है। 'राष्ट्रीय' शब्द से और राष्ट्रीय से राष्ट्रीयता शब्द की संरचना हुई है। राष्ट्र विशेष के गुणों या राष्ट्रीय के प्रति विशिष्ट प्रेम को राष्ट्रीयता की संज्ञा दी जा सकती है। इस प्रकार राष्ट्रीयता राष्ट्र विशेष की आत्म-चेतना है। राष्ट्रीयता के अन्तर्गत राष्ट्र या देश के प्रति व्यक्ति का संवेदनशील घनिष्ठ सम्बन्ध होता है। राष्ट्रीयता मनुष्य की सहज और स्वाभाविक वृत्तियो में से एक है, जिसके आधार पर वह अपने देश के प्रति आत्मीय, लगाव का अनुभव करता है। वह अपने देश को समुन्नत, विकसित और गतिशील बनाने के लिए सदैव उत्सुक रहता है। इसी भावावेश मे वह राष्ट्र की रक्षा, कल्याण और विकास के लिए सर्वस्व न्यौछावर करते हुये अपना गौरव समझता है। यह निर्विवाद सत्य है कि जब व्यक्ति स्व कर परिधि से बाहर आकर सामाजिक संदर्भ में धार्मिक जातीय और धार्मिक संस्पर्श करता हुआ राष्ट्रीयता के विशाल परिवेश में पहुचता है, तो उसमें दिव्य और आदर्श भाव विकसित हो जाते है। राष्ट्र-प्रेम मानव में राष्ट्र के समाज, प्रकृति, उसकी सांस्कृति, उन्नति औ विकास के प्रति भावनात्मक लगाव उत्पन्न करता है। राष्ट्र प्रेम मानव-मन में उत्साह, त्याग और उत्सर्ग का अपूर्व भाव भरता है। सच्चा राष्ट्र-प्रेम

आत्मा के दिव्य भाव का साक्षात्कार करता है, जिससे देश के समस्त मानव, पशु-पक्षी और प्रकृति से आत्मीय लगाव का अनुभव करते है। राष्ट्र की मनमोहक छाया में पहुचकर मानव के भावनात्मक विकास भूत, वर्तमान से लेकर भविष्य तक हो जाता है। राष्ट्र प्रेम में स्वदेश के प्रति आदर और सम्मान कर भाव होता है। इसी तथ्य को स्पष्ट करते हुए बाबू गुलाबराय ने कहा है किसी विशिष्ट भौगोलिक इकाई के जनसमुदाय के पारस्परिक सहयोग और उन्नति की अभिलाषा से प्रेरित, उस भू-भाग के लिए प्रेम और गर्व की भावना को राष्ट्रीयता कहते' है। वस्तुतः राष्ट्रीयता एक अनूठी भाव-धारा है, जिसमें राष्ट्र के सूक्ष्म और स्थूल दो तथ्यों के प्रति उत्तरोत्तर लगाव दिखाई देता हे। राष्ट्रीयता के स्थूल तथ्यों में भोगोलिक और प्राकृतिक संदर्भ आते है, तो सूक्ष्म तथ्यों मे सांस्कृतिक, धार्मिक, दार्शनिक, आध्यात्मिक, ऐतिहासिक, सामाजिक, राजनीतिक, साहित्यिक, कलात्मक, भाषायी चेतना आती है।

राष्ट्रीयता के संदर्भ मे राष्ट्र की भौगोलिक सीमा के प्रति निष्ठा होना प्राथमिक आधार है। भौगोलिक सीमा राष्ट्र की भूमि और उकसी पहचान निर्धारित करती है। भूमि विषयक देश-प्रेम मनुष्य में राष्ट्रीयता की पावन चेतना का आधार सिद्ध होता है। भू-भाग के आधार पर ही समस्त जन-समूह के प्रति सहज स्नेहिल भाव उभरता है। यदि भूमि की विभिन्न वस्तुओं के प्रति लगाव बढता है तो प्रकृति से उदात्त तत्वों का विकास होता है। संस्कृति की भाव-तरंगिणी राष्ट्र की अनुप्रेरक आत्मशक्ति है। वस्तुतः संस्कृति राष्ट्र को महिमा मंडित करने वाली आत्मशक्ति है। मनुष्य का संस्कारित आदर्श विचार उसे मानवतावादी धरातल पर पहुँचा देता है और फिर अनुकरणीय राष्ट्रीयता का विकास होता है। संस्कृति के अन्तर्गत आदर्श, परस्पर, रीति-रिवाज, साहित्य, संगीत और कला की बलवती भूमिका होती है।

राष्ट्रीयता के लिए सांस्कृतिक एकता अनिवार्य तत्व है और इसके विद्यमान रहने पर ही राष्ट्र मे एकता की भावना जागृत होती है। राष्ट्रीयता में व्यक्ति राष्ट्र की गौरव-गरिमा की रक्षा के लिए समर्पित होने के लिए तत्पर रहता है। राष्ट्रीय चेतना को जागृत करने में ऐतिहासिक संदर्भो की महती भूमिका होती है। देश के निर्माण में ऋषि, मुनियों, महात्माओं, मनीषियों के चिंतन और गतिशीलता का योगदान होता है। अतीत की गौरव-गाथा से जन-मन को सन्मार्ग पर गतिशील रहने की प्रेरणा मिलती है। निश्चय ही राष्ट्रीय चेतना में राष्ट्र की स्वतंत्रता, अखंडता और एकता की पावन-त्रिवेणी का प्रवाह होता है।

'चेतना' शब्द अंग्रेजी शब्द कानशियसनेस का हिन्दी पर्यायवाची है। डॉ रामप्रसाद त्रिपाठी ने चेतना को विवेकपूर्ण वैचारिक माना है।

"दिनकर" की राष्ट्रीय चेतना :-

दिनकर का अधिकांश साहित्य राष्ट्रीय चेतना से ओत-प्रोत है। चीन से युद्ध के दिनों में दिनकर की 'परशुराम की प्रतीक्षा' कविता अत्यन्त प्रसिद्ध हुई। इस कविता में देश के सैनिको को अहिंसा त्यागकर पौरूष बनने का आह्वान किया गया है। सन् 1962 के चीनी-भारतीय युद्ध के समय कविवर 'दिनकर' ने 'परशुराम की प्रतीक्षा' कविता में देश के पौरूष को जागृत करते हुए सिंह गर्जना की थी-

वैराग्य छोड़ बाहों की विभा संभालो,

चानों की छाती से दूध निकालों

है रूकी जहाँ भी धार, शिलाएँ तोडो,

पीयूष चन्द्रमाओं को पकड़ निचोडो।

चढ़ तुंग शैल शिखरों पर सोम पियों रे,

योगियों नहीं, विजयी के सद्श जियों रे।

(परशुराम की प्रतीक्षा)

'दिनकर' अपनी काव्य-चेतना के बारे मे लिखते है-

क्रांति-धात्रि कविते! उठ अंबर में आग लगा दे।

पतन, पाप, पाखंड जले, जग मे ऐसी ज्वाला सुलगा दे।

'दिनकर' प्रेम, राष्ट्रीयता, मानवता और क्रांति के गायक है। उनकी कविता में राष्ट्र-व्यापी जागरण का स्वर है। एक ओर वे अपने अतीत से प्रभावित है तो दूसरी ओर वर्तमान की अधोगति से क्षुब्ध। प्राचीन गौरव के प्रति उनके मन में अगाध श्रद्धा है। दिनकर की कविता में दीन, दुःखी और दलितों के प्रति सहानुभूति एवं

संवदेना भी है। उन्होने श्रमिको और कृषको के दयनीय जीवन का मार्मिक अंकन किया है। निम्न पंक्तियों में उनकी सहानुभूति एवं संवेदना द्रष्टव्य है-

आहें उठो दीन कृषकों की।

मजदूरों की तडप पुकारें ।

अरी गरीबी के लोहू पर ।

खडी हुई तेरी दीवारे.....।

कवि ने हिमालय का मानवीकरण किया है। वास्तव में कवि हिमालय के माध्यम से भारतीयों को संबोधित करते हुए कहते हैं-

ओ, मौन तपस्वी-लीन यती।

पत भर को तो कर दृगोन्मेष।

रे ज्वालाओं से दग्ध, विकल

है तडप रहा पद पर स्वदेश

सुख-सिन्धु, पंचनद, ब्रह्मपुत्र,

गंगा, यमुना की अमिट-धार,

जिस पुण्यभूमि की ओर बही,

तेरी विगलित करूणा उदार ।

(हिमालय)

कविवर दिनकर कहते है - हे हिमालय, देश के कितने वीर पुरूष रूपी रत्न हमसे छिन गए, जो स्वतंत्रता की चिनगारी जलाए रहें भारत का अनंत वैभव चला गया। हिमालय समाधिस्थ होकर साधना ही करता रहा और प्यारा देश भारत इन वीर रत्नों से रहित हो गया।

महाभारत काल में दुःशासन ने केवल एक द्रोपदी के बाल खींच लिये थे, जिसके कारण महाभारत के भयंकर युद्ध की योजना बनाई गई है और आज न जाने कितनी स्त्रियों के सतीत्व को लुटा जा रहा है और कितनी कन्याओं का अपहरण हो रहा है, किन्तु फिर भी किसी के मन में पीड़ा नही कि इन अत्याचारों का प्रतिरोध किया जाए। चित्तौड से पूछो कि जरा-स अत्याचार होने पर या किसी नारी की ओर किसी की कुदृष्टि होने पर बडे-बडे संग्राम रचे गए और नारियॉ जौहर व्रत करके जीते-ती अपने प्राणो की बलि दे दिया करती थी। कवि ने इसी पीडा को निम्न शब्दों में प्रकट किया है-

कितनी मणियाँ लुट गई? मिरा

कितना मेरा वैभव अशेष।

तू ध्यान-मग्न ही रहा, इधर

वीरान हुआ प्यारा स्वदेश।

कितनी द्रोपदियों के बल खुले?

किन-किन कलियों का अंत हुआ?

कह हृद य खोल चित्तोड़ ! यहॉ

कितने दिन ज्वाल-बसंत हुआ?

(हिमालय)

हिमालय का गौरव-गान करके देशोद्धार का प्रेरणा देते हुए कवि भारत के अतीत वैभव और वीर भाव को जगाना चाहता है। कवि हिमालय को संबोधित करके कहता है कि हे हिमालय ! आज इस समय हमे अर्जुन और भीम तथा उनके क्रमशः गांडीव धनुष और गदा की आवश्यकता है उन्हे लौटा दे। आज युद्ध मे पूर्ण पराक्रम

दिखाकर शत्रु पर विजय प्राप्त करने वाले योद्धाओं की आवश्यकता है। कवि शंकर के आवास-स्थल हिमालय से प्रार्थना करता है कि तू शिवजी से प्रार्थना कर कि वे पुनः एक बार तांडव नृत्य करें जिससे सारे भारत मं हर-हर, बम-बम की ध्वनि गूंज उठे जिसकी अंगडाई लेकर सारी भूमि काँप उठे अर्थात सर्वत्र भयंकर हलचल मत्र जाए। यथा-

रे रोक युधिष्ठिर को न यहाँ,

जाने दे उनकी स्वर्ग धीर,

पर, फिरा हमें गांडीव-गदा,

लौटा दे अर्जुन-भीम वरी।

कह दे शंकर से , आज करें,

के प्रलय-नृत्य फिर एक बार।

सारे भारत मे गूँज उठे,

हर-हर, बम-बम का फिर महोच्चार ।

(हिमालय)

क्वि देश के लोगो को जागृत करते हुए कहता है कि लक्ष्य पास आ जाने पर थक कर बैठ जाना उचित नहीं है-

दिशा दीप्त हो उठी प्राप्त कर पुण्य-प्रकाश तुम्हारा।

लिखा जा चुका अनल-अक्षरो में इतिहास तुम्हारा।

जिस मिी ने लहू पिया, वह फूल खिलायेगी ही,

अम्बर पर धन बन छाएगा ही उच्छवास तुम्हारा।

और अधिक ले जॉच, देवता इतना क्रूर नहीं है।

थककर बैठ गये क्यों भाई! मंजिल दूर नहीं है।

उक्त कविता का आशय है कि - जिस भारत भूमि की स्वतंत्रता के लिए इतने बलिदान हुए, उसमें स्वतंत्रता का फूल खिलकर ही रहेगा। यह आशा अवश्य फलवती होगी। हमारी पीडा जन्य सांसे आकाश में बादल बनकर अवश्य छायेगी। जिससे स्वतंत्रता के रूप में सुखों की वर्षा होगी। हे भाई, अब लक्ष्य निकट ही है, अतः थक कर मत बैठो। तुम साधना - श्रम करों जिससे तुम शीघ्र लक्ष्य की प्राप्ति कर सको। 'आग की भीख' कविता में देश की दयनीय स्थिति का चित्रण करते हुए भगवान से स्वदेश के हित वरदान की भीख माँगता है कि उसके देश की सारी बुराईयॉ दूर हो जायें।

मन में बधी उमंगे असहाय जल रही है।

अरमान-आरजू की लाशे निकल रही है।

भीगी-खुली पलों मे राते पुकारते है।

सेती वसुंधरा जब, तुझको पुकारते है।

इनके लिए कही से निर्भीक तेज ला दे,

उन्माद, बेकली का उत्थान मॉगता हूँ।

विस्फोट मॉगता हूँ, तूफान मॉगता हूँ

अर्थात हे प्रभु! देश के युवको के हृदयों मे हिलोरे ले रही उमंगे साधनों के अभाव में व्यर्थ जल रही हे। उनके मन की इच्छाओं और तमन्नाओ का जनाजा निकल रहा है। आंखों से निकले आंसुओ के कारण भीगी और खुली आंखो के साथ पल-पल गिनकर राते काट देते है। जब सारी धरती सुखपूर्वक सो रही होती है तो से निराश युवक सहायता के लिए तुझे पुकारते हैं।

हे प्रभु ! तू इन युवको के हृदय में निर्भीक तेज का संचार कर दे। कविवर दिनकर ने ओजस्वी शब्दों में राष्ट्रीय चेतना के संदर्भ में अतीत का गौरव-गान किया है। 'रेणुका' में संकलित 'हिमालय' कविता में वे कहते हैं-

तू पूछ अवध से, राम कहाँ? वृंदा घनश्याम कहा?

ओ मगध ! कहाँ मेरे अशोक? वह चन्द्रगुप्त बलधाम कहाँ?

री कपिलवस्तु! कह बुद्ध देव के ये मंगल उपदेश कहाँ?

तिब्बत ,इरान, जापान, चीन, तक गये हुए संदेश कहाँ,

निष्कर्ष : वस्तुतः कविवर 'दिनकर' संवेदनशील कवि है। उनका अधिकांश साहित्य राष्ट्रीय चेतना से ओत-प्रोत है। उन्होने सामाजिक उत्थान-पतन और आंदोलन से प्रभावित होकर काव्य सृजन किया है। देश पर जब-जब संकट के बादल घिरते है, मानव-जीवन संघर्ष में जुझने लगता है, तब-तब दिनकर की कविता जन-मानस में ऊर्जा का संचार करती है। उनकी कविता देश की संस्कृति, सभ्यता, भाषा, परम्परा और आदर्श आदि की अनूठी एकता की आधार भूमि प्रस्तुत करती है।

सन्दर्भ सूची :

1. हिन्दी साहित्य का इतिहास, डॉ. नगेन्द्र
2. दिनकर एक शताब्दी, डॉ. स्वयंवती शर्मा, डॉ. दिनेश कुमार
3. दिनकर की काव्यभाषा, डॉ. यतीन्द्र तिवारी
4. राष्ट्रकवि दिनकर एवं उनकी काव्यकला, शिखर चन्द्र जैन
5. दिनकर का वीरकाव्य, धर्मपाल सिंह आर्य
6. दिनकर व्यक्तित्व और रचना के नये आयाम, डॉ. गोपाल राय सत्यकाम